International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

तुलसीदास जी के काव्य में प्रकृति सौन्दर्य

अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापिका (एकस्टेंशन)
विषय – हिन्दी
रा॰ स्ना॰ महाविद्यालय,
गोहाना

भूमिका – मानव जीवन वैसे तो समस्त प्रकृति की गोद में ही गुजरता है सारी घटनाएं इसी के आंगन में घटित होती है। मानव प्रकृति की गोद में ही आंखें खोलता है व इसी की गोद में अंतिम सांस लेकर सो जाता है। तो हमारे काव्य निरूपण में कवि क्यों प्रकृति से अछूते रहते। और गोस्वामी तुलसीदास जी तो सदैव इसके साथ न्याय किया। काव्य में प्रकृति वर्णन से तात्पर्य उन वस्तुओं के वर्णन से है जो मानव निर्मित न होकर सहज नैसर्गिक स्थिति में होता है। जैसे वन, पर्वत, सरिता, पृथ्वी, सागर, आकाश आदि। कवि वनस्पति शास्त्री या भूगोलवेत्ता की भांति प्रकृति का अध्ययन या जानकारी प्राप्त करने हेतु नहीं करता न वह प्रकृति को ज्ञान या अर्थबोध की दृष्टि से देखता वरन् वह अपनी संवेदनाओं व अनुभवों तथा कल्पनाओं को आकार देने के उदश्य से ही प्रकृति को केन्द्रित करके काव्य रचना करता है।

मनव को प्रकृति के समस्त भौतिक व जैविक पदार्थ सुख में सुखी व दुख में सब मलिन लगते हैं। इन पंक्तियों में देखिए किस प्रकार कवि प्रकृति को जोड़कर उपमा दे रहे हैं –

नील जलद पर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनो तड़ित छपाए।

अंग–अंग पर भर निकर मिलि छवि समूह लै लै जनु छाए।।2

तुलसी–साहित्य के प्रकृति वर्णन पर अनेक प्रारूप –

तुलसीदास जी ने प्रकृति चित्रण के साथ सुन्दरता वर्णन को जोड़कर हृदय से इसे चित्रित किया। उनके वर्णन से प्रकृति के हर अंश के प्रति अनुराग परिलक्षित होता है। उनकी सौन्दर्योन्मुखी सूक्ष्म दृष्टि ने न सिर्फ प्रकृति चित्रण में चार चांद लगा दिए अपितु उनकी द्वंदात्मक दृष्टि ने भौतिक–जैविक, चर–अचर, जड़–चेतन, मंगलकारी–अमंगलकारी दोनों रूप प्रस्तुत किए हैं। उनकी प्रकृति मानवीय भावनाओं, भक्ति, धर्म तथा नैतिकता से परिपूर्ण है। इसी कारणवश वह राम के सुख से सुखी व दुख में दुखी प्रतीत होती है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

आचार्य चंद्रबली पांडेय के कथन में देखिए – "मानस की अपेक्षा गीतावली में प्रकृति पर तुलसी की अधिक दृष्टि रही है उसी का वर्णन फलतः अच्छा हुआ है।"3

तुलसीदास जी ने प्रकृति के दो रूप दिए –

1 भौतिक प्रकृति

2 जैविक प्रकृति

इन दोनों में उन्होंनें ईमानदारी से वर्णन करते हुए हमारे सामने प्रकृति का नया रूप हमें दिखाया। उन्होंनें भौतिक प्रकृति यानि पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु सबका अपना महत्व बताया जैसे धार्मिक नदी में स्नान करने से मन की इच्छा पूरी होती है आदि। वहीं दूसरी तरफ वो बतातें हैं कि जैविक प्रकृति यानि पशु व पक्षी सबका अपना महत्व है बल्कि उपमा देखिए –

हथिनी की चाल की प्रशंसा, मृग के नयन आदि। सरयू नदी के तट पर रामचन्द्र जी की विभिन्न क्रिड़ाओं का वर्णन किया है।।4

इसी तरह मछली की उपमा दी है कि मीन की तरह प्रियतम से दूर होकर त्याग देती है जैसे वो पानी से बिछुड कर जीवित नहीं रह पाती।।5

प्रकृति का संश्लिष्ट चित्रण – उनकी सूक्ष्म दृष्टि प्रकृति के प्रत्येक अंग पर रही है, किंतु शुद्ध प्रकृति चित्रण की दृष्टि से उन्होंने वर्णन नहीं किया, बल्कि उनकी भक्ति भावना और उनका प्रतिपाद्य विषय राम–चरित्र का वर्णन कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में निहित रहा है। गीतावली में चित्रकूट की प्रकृति का चित्रण इतना संश्लिष्ट है किंतु उसमें भी राम भक्ति के कारण आध्यात्मिकता का आवरण सर्वत्र छाया हुआ है देखिए एक उदाहरण –

जल सुत विमल सिलनि झलकत नभ–बन प्रतिबिंब तंसा।

मानहु जग–रचना विचित्र बलिसति बिराट अंग–अंग।

मंदाकिनिहि मिलत झरना झरि–झरि भरि भरि जल ओछ।

तुलसी सकल सुकृत सुख लगे मानौ राम–भगति के पाछे।।6

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

किस तरह भक्ति के साथ–साथ प्रकृति को जोड़ सुख में सुखी व दुख में दुखी व बाल लीलाओं के साथ झरने का जुड़ाव उन्होंनें कैसे बाल लीला के साथ दृश्य–बिंब तैयार करके उदाहरण दिया है।

सरित–सरनि सरसीरूह फूले नाना रंग

गुंजन मंजु मधुपवन, कूजत विविध विहंग।।7

उक्त वर्णनों में केवल नाम–परिगणन की शैली ही नहीं है वरन् ऐसा लगता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्वयं प्रकृति दृश्यों को देखा है तभी कमलों के खिलने, झरनों की झिग–झिग, पक्षियों की चहचाहट, भौरों की गुंजार तथा मदमस्त भृगों और हंसों की क्रिड़ा का वर्णन इतना स्वाभाविक बन पड़ा है।

प्रकृति सौन्दर्य और ऐन्द्रिय बोध – मनुष्य का सम्पूर्ण सौन्दर्य बोध ऐन्द्रिय बोध पर ही आधारित है। जिस कवि का ऐन्द्रिय बोध जितना अधिक तीव्र होगा उसका सौन्दर्य बोध भी उतना तेज होता है तुलसी दास जी इसी कारण इतना संवेदनशील चित्रण कर पाये हैं। कहीं कहीं तो कवि की सौन्दर्योन्मुखी प्रतिभा ने दो–चार पंक्तियों में ही रूप, ध्वनि, गंध, स्पर्श और रस की सभी संवेदनाओं में संयुक्त प्राकृत दृश्यों का चित्रण हुआ है –

गायक सुक कोकिल झिल्ली लाल, नाचत बहु भांति बरहि भराल।

मलयानिल सीतल, सुरभिमंद, बह सहित सुमन रस रेनु बृंद।

मनु छिरकत फिरत सवनि सुरंगा भ्राजत उदार लीला अनंग।।

इन संवेदनाओं के साथ पंक्ति में जो रंग जुड़ा है वह उदाहरण को सुंदरता बढ़ाने में सहायता दे रहा है।

प्रकृति में धर्म व नैतिक तत्व – भक्ति, नैतिकता, धर्म तथा महत् की उपासिका तुलसी की मानसिकता ने अपने सभी भावों का प्रकृति पर भी प्रेक्षेपण किया है। तुलसी के राम के प्रति प्रगाढ़ भक्ति व अनुराग को व्यक्त करते हैं। इसके पीछे उनकी यह भावना क्रियाशील है कि राम जहां जाएं वही स्थान समग्र सुख संपन्न हो जाए।

यहि मृदु पथ, घन छांह, सुमन सुर बरष, पवन सुखदाई।

जल थल रूह फल, फूल सलिल सब करत पहुनाई।।8

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रकृति का इस प्रकार वर्णन तुलसी के भक्त और सौन्दर्य प्रेमी व्यक्तित्व का परिचायक है।

प्रकृति से शुभ संदेश ग्रहण व प्रतिकात्मकता – वास्तव में प्रकृति–चित्रण तथा उसके माध्यम से नैतिक उपदेश का सुंदर चित्रण रामचरित मानस में वर्षा ऋतु तथा शरद ऋतु वर्णन के समय हुआ है –

दामिनी दमकि रहि घन मांहि, खल की प्रीति यथाथिर नाहीं।

बरषहिं जलद भूमि नियराये, यथा नवहिं बुध विद्या पाये।

भूमि परत मा ढावर पानी, जिमि जीवहिं माया लपटानी।।9

तुलसी जी ने साहित्य में जहां भी प्रकृति के माध्यम से संदेश दिया है वही बहुत सटीक व सजीव बन पड़ा है। जहां भी प्रतीकात्मक चित्रण है वहीं उत्कृष्ट हो जाता है। इनका प्रतीक चित्रण अत्यंत सुन्दरता प्रदान करने वाला बन पड़ा है।

लपट कराल ज्वाल जालमाल दहूं दिसि।

धूम अकुलाने पहिचानै कौन काहि रे।।10

प्रकृति का विराट रूप – वास्तव में तुलसी जी विराट के कवि हैं। कविताावली का एक उदाहरण देखिये –

लागि–लागि आगि, भागि भागि चले जहां तहां।।11

इतने विकराल अग्निकांड़ को देखकर आंखें विस्मय से फटी रह जाती है। तथा मानव बुद्धि भी हतप्रभ हो जाती है। उन्होंनें अनेक स्थान पर विशाल समुद्र नदीयों व झरनों के द्वारा जो चित्र बनाए है उनकी भव्यता से तो दिल दहल उठता है। प्रकृति के साथ राम के विराट रूप को जोड़कर उनकी विशाल भुजाओं का विशाल शरीर के साथ प्रकृति भी फैल कर स्वागत करती है ये सारे विराट के ही उदाहरण है जो तुलसी जी की संवेदना से जुड़ कर और भी महान रूप ले लिया है। उनका प्रेम रूपी विशाल हृदय प्रकृति से मिलकर अनेक नए रूप हमें दर्शाती है जो तुलसी जी की महानता को ही दर्शाता है।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रकृति अपने भौतिक रूप में भी और भावात्मक रूप में भी कवि की सौन्दर्य चेतना को स्पंदित एवं अनुप्राणित करती रही है। प्रकृति की सुंदर व पवित्र नदियों, वृक्षों व पशु–पक्षियों के साथ–साथ असुंदर वस्तुओं का भी चित्रण उसी सूक्ष्मता

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

व मनोयोग से किया गया है। अमृत, हंस, कोकिल व कमल जहां अपने गूणों के कारण तुलसी को आकर्षित करते हैं वहीं विष, बगुला, काक व कुमुद आदि अपने अवगुणों के कारण आकर्षित करते हैं। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि तुलसीदास जी ने प्रकृति का चित्रण करते हुए उसके सुंदर–असुंदर दोनों पक्षों को समान रूप से चित्रित किया है तथा असुंदर पर सुंदर की विजय दिखाते हुए अपनी सौन्दर्योन्मुखी दृष्टि का परिचय दिया है। हम कह सकते हैं तुलसी साहित्य प्रकृति के सहज स्वाभाविक सौन्दर्य से परिपूर्ण है।

संदर्भ

1 डॉ॰ हरिश्चंद्र वर्मा, तुलसी–साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ–387

2 गीता बा॰ का॰, 26, 6–7

3 आचार्य चंद्रबली पांडेय, तुलसीदास, पृष्ठ–296

4 गीता बा॰ का॰ 45–1, उत्तर कांड 3–2, कविता बा॰ का॰,7

5 दोहावली, 3, 56, 320, कविता, उ॰ का॰ 37,177

6 गीता बा॰ का॰ 54–4, कविता बा॰ का॰ 5, गीता अरण्य का॰, 17–1

7 गीता अयो॰ का॰, 47

8 गीता बाल का॰, 55–4

9 रा॰ मा॰, किष्किंदा का॰, 13–3

10 कविता लं॰ कां॰–6

11 कविता सुंदर का॰, 16